Seminar on

Extension of Forestry Research to Stakeholders

[29th January, 2020]

Forest Research Institute, Dehradun is a premier institute in the field of forestry research. Different extension activities are carried out from time to time to bring various aspects of forestry research to the common man. In this context Extension Division, FRI organized a Seminar on "Extension of Forestry Research to Stakeholders. Shri Arun Singh Rawat, Director, FRI inaugurated the Seminar and in his address, he said that the extension activities for dissemination of forestry research has to be done according to the need and interest of farmers, NGOs, Self Help Groups and other stakeholders. Further he said that a strong extension strategy is needed of for dissemination of forestry innovations in effective and efficient way.

Dr. Shamila Kalia, ADG (M & Extn.) Directorate of Extension, Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) gave brief account about new Extension Strategy drawn by the ICFRE for extension of forestry research to different target groups. Dr. A.K. Pandey, Head, Extension Division, FRI told about the research and extension activities being carried out by the institute. He mentioned that the institute has established Van Vigyan Kendras in the states of Punjab, Haryana, Uttrakhand, Uttar Pradesh and UT Delhi & Chandigarh and extension activities are being carried out through these Van Vigyan Kendras in these states and Union territories. A Demo village is also established in Uttarakhand where different extension programmes are conducted from time to time. He told that networking between Van Vigyan Kendra and Krishi Vigyan Kendra has also been established so that research done in forestry and agriculture field may be disseminated in integrated way. The institute is also participating in different extension programmes like trainings, interactive meets, awareness campaign and Tree growers Mela etc.

Dr. Randhir Singh Poswal, ADG (Extension), Indian Council of Agricultural Research (ICAR), New Delhi also expressed his views and said that FRI and ICAR can work together in this direction. On this occasion, Shri Vineet Pangty, IFS, APCF, Uttarakhand Forest Training Academy, Haldwani, Uttarakhand; Dr. Kinkini Dasgupta Misra, Scientist, Vigyan Prasar, DST, New Delhi; Dr. Kavita Tyagi, National Medicinal Plants Board, AYUSH, New Delhi; Dr. D. D. Sharma, Head, Extension, Y.S.Parmar University, Solan, HP; Dr. Sanjeev Kumar Chauhan, Head, Forestry,

Punjab Agriculture University, Ludhiana; Shri Rakesh Singh Kanyal, Assistant Manager, Farm Sector Development Department, NABARD, Dehradun; Dr. Sunil Sah, Scientist, Centre for Aromatic Plants, Selaqui, Dehradun; Shri Ajay Kumar Saini, Jyoti Gramoudhyog Sansthan, Saharanpur; Mr. Inder Singh Negi, Regional Manager, Tehri Region, Uttarakhand Forest Development Corporation, Dehradun and farmers also expressed their views. IT was felt that FRI should indentify its partner institutions for different extension programmes. Farmer friendly agro-forestry model and technologies need to be developed. State Agricultural Universities and KVKs may be involved in extension programmes. The state specific extension programme may be formulated for strengthening our extension mechanism. Dr. Charan Singh, Scientist-E, Dr. Devendra Kumar, Scientist-E, Shri Ajay Gulati, ACTO, Shri Vijay Kumar, ACF. Shri Ramesh Singh, Assistant, Preetpal Singh, Dy. Ranger and other team members contributed towards success of seminar.

Glimpses of the Seminar

संगोष्ठी (Seminar)

संगोष्ठी (Seminar)
29th January, 2020

Agroforestry
Technology
Extension in
Punjab
Sanjeev K. Chauhan

संगोष्ठी (Seminar)

संगोष्ठी (Seminar)

Press Clips

www.jagran.com

किसानों के लिए लाभप्रद एफआरआइ के शोध कार्य

जागरण संवाददाता, देहरादून: वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) के निदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि संस्थान अपने शोध कार्य किसानों, गैर सरकारी संगठनों व स्वयं सहायता समूहों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ा रहा है। जिससे अधिक से अधिक हितधारकों को इसका लाभ मिल सके।

संगोष्ठी

- हितधारकों के लिए वानिकी अनुसंधान का विस्तार' विषय पर हुई संगोष्ठी
- वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक अरुण सिंह रावत ने किया संगोष्ठी का उद्घाटन

बुधवार को संस्थान के विस्तार प्रभाग ने 'हितधारकों के लिए वानिकी अनुसंधान का विस्तार' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। जिसका उद्घाटन एफआरआइ के निदेशक अरुण सिंह रावत ने किया। उन्होंने कहा कि विस्तार कार्य के लिए सभी विभागों में आपसी सामंजस्य स्थापित किए जाने की जरूरत है। जिससे विस्तार कार्य प्रभावी तरीके से किया जा सके। गोष्ठी में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार) डॉ. शामिला कालिया ने वानिकी अनुसंधान कार्यों के विस्तार के लिए बनाई गई रणनीति पर प्रकाश डाला। संस्थान के प्रभाग प्रमुख डॉ. एके पांडे ने कहा कि संस्थान उत्तराखंड के साथ ही पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और चंडीगढ़ में वन विज्ञान केंद्रों पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से विस्तार गतिविधियों का आयोजन कर रहा है।

Dainik Jagaran (30-1-2020)

अनुसंधान कार्यों के प्रचार-प्रसार पर जोर

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान एफआरआई में बुधवार को हितधारकों के लिए वानिकी अनुसंधान का विस्तार विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। संस्थान के निदेशक अरुण सिंह रावत ने बतौर मुख्य अतिथि संगोष्ठी का शुभारंभ किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों व अन्य हितधारकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपने अनुसंधान कार्यों को उन तक पहुंचाने के लिए विभिन्न प्रचार-प्रसार माध्यमों का उपयोग करना है। कहा कि विस्तार कार्य में सभी विभागों के आपसी सामंजस्य स्थापित किए जाने की आवश्यकता है। डा. शामिला कालिया ने वानिकी अनुसंधान कार्यों के विस्तार हेतु बनाई गई रणनीति पर प्रकाश डाला। डा. एके पांडेय, डा. रणधीर सिंह, डा.के दासगुप्ता, डा. कविता त्यागी, डा. डीडी शर्मा, डा. संजीव कुमार व डा. देवेन्द्र कुमार आदि ने भी संगोष्ठी में अपने विचार रखे।

Rashtriya Sahara (30-1-2020)

वानिकी अनुसंधान का विस्तार विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

■ अनुसंधान कार्यों को पहुंचाने के लिए प्रचार प्रसार माध्यमों का करें उपयोग : रावत

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन अनुसंधान सस्थान में विस्तार प्रभाग ने बुधवार को हितधारकों के लिए वानिकी अनुसंधान का विस्तार विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अरूण सिंह रावत, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान ने संगोष्ठी का उदघाटन करते हुए सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों तथा अन्य हितधारकों की आवश्यकताओं को धयान में रखते हुए, अपने अनुसंधान कार्यों को उन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न प्रसार-प्रचार माधयमों का उपयोग करना है।

उन्होंने आगे कहा कि विस्तार कार्य सभी विभागों के आपसी सामंजस्य स्थापित किये जाने की आवश्यकता हैं जिससे कि विस्तार कार्य प्रभावी तरीके से किया जा सके। डॉ. शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक मीडिया एवं विस्तार, विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने परिषद के अंतर्गत कार्य कर रहे संस्थानों में हो रही वानिकी अनुसंधान कार्यों के विस्तार के लिए बनाई गई रणनीति पर प्रकाश डाला। डॉ. ए.के. पाण्डेय, प्रभाग प्रमुख, विस्तार प्रभाग, व.अ.सं. ने संस्थान में हो रही विस्तार गतिविधियों के बारे में बताया। डॉ. रणधीर सिंह पोस्वाल, सहायक महानिदेशक विस्तार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने कहा कि वन अनुसंधान संस्थान तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् इस दिशा से मिलकर कार्य कर सकते हैं।

इस अवसर पर विनीत पांगती, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उत्तराखण्ड वन प्रशिक्षण अकादमी, हल्द्वानी, डॉ. किंकिनी दासगुप्ता मिश्रा, विज्ञान प्रसार, डी.एस.टी. नई दिल्ली, डॉ. लक्ष्मण सावंत, डाबर इण्डिया लि., डॉ.कविता त्यागी, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली, डॉ. डी.डी. शर्मा, वाई.एस. परमार विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश, प्रो. डॉ. संजीव कुमार चौहान, पंजाब कृषि विश्व. विद्यालय, लुधियाना, राकेश सिंह कन्याल, सहायक प्रबंधक, नाबार्ड, देहरादून, डॉ. सुनील सह, वैज्ञानिक, सेन्टर फॉर ऐरोमैटिक प्लान्ट्स, सेलाकुई, देहरादून, अजय कुमार सैनी, ज्योति ग्रामोद्योग संस्थान, सहारनपुर एवं इन्दर सिंह नेगी, क्षेत्र प्रबंधक टिहरी क्षेत्र, उत्तराखण्ड वन विकास निगम आदि ने भी अपने विचार रखे।

विस्तार प्रभाग से डॉ. चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई, डॉ. देवेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-ई, अजय गुलाटी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, विजय कुमार, सहायक वन संरक्षक, रजनी दुग्गल, अनुभाग अधिकारी, रमेश सिंह, प्रीतपाल सिंह, सहायक वन रेंज अधिकारी आदि ने सम्पूर्ण संगोष्ठी को आयोजित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई।

Shah Times (30-1-2020)

'अनुसंधानों को जन-जन तक पहुंचाएं'

माई सिटी रिपोर्टर

वन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक सेमिनार में वन विज्ञान केंद्रों को कारगर बनाने पर दिया जोर

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान की ओर से वानिकी के क्षेत्र में किए जा रहे शोध का फायदा जन-जन को मिले, इसके लिए वन विज्ञान केंद्रों को और कारगर बनाना होगा। साथ ही वानिकी के शोधों को आमजन तक पहुंचाना होगा। ये बातें वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक अरुण सिंह रावत ने कही। निदेशक रावत वन अनुसंधान संस्थान के विस्तार विभाग की ओर से आयोजित सेमिनार में संबोधित कर रहे थे।

निदेशक रावत ने कहा कि किसानों, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों तथा आमजन को वन अनुसंधानों का अधिकतम लाभ मिले, इसके लिए विभिन्न प्रसार-प्रचार माध्यमों का उपयोग करना होगा। साथ ही सभी विभागों के आपसी सामंजस्य स्थापित किए जाने की आवश्यकता है।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की सहायक महानिदेशक डॉ. शामिला कालिया ने परिषद के तहत काम कर रहे संस्थानों में हो रहे वानिकी अनुसंधान कार्यों के विस्तार को लेकर बनाई गई रणनीति की जानकारी दी। संस्थान के विस्तार प्रभाग के प्रमुख डॉ. एके पांडेय ने अनुसंधान संस्थान में वानिकी को लेकर किए जा रहे शोधों पर जानकारी दी।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक डॉ. रणधीर सिंह पोस्वाल ने कहा कि वन अनुसंधान संस्थान तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् इस दिशा से मिलकर कार्य कर सकते हैं। सेमिनार में एपीसीसीएफ विनीत पांगती, डॉ. किंकिनी दासगुप्ता मिश्रा, डॉ. लक्ष्मण सावंत, डॉ. कविता त्यागी डॉ. डीडी. शर्मा, वाईएस परमार प्रो. सजीव कुमार चौहान, राकेश सिंह कन्याल, डॉ. सुनील सह, अजय कुमार सैनी, इंदर सिंह नेगी समेत कई वक्ताओं ने संबोधित किया। इस दौरान डॉ. चरण सिंह, डॉ. देवेंद्र कुमार, अजय गुलाटी, विजय कुमार, रजनी दुग्गल, रमेश सिंह, प्रीतपाल सिंह आदि उपस्थित थे।

Amar Ujala (30-1-2020)